IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि, तथा अभिप्रेरणा समस्याओं का मध्यवर्ती अध्ययन : माध्यमिक विद्यालयी किशोरों पर एक तुलनात्मक विश्लेषण

A Correlational Study of Interests, Emotional Intelligence, and Motivational Problems among Secondary School Adolescents

पम्मी कुमारी
शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग
अरनी विश्वविद्यालय, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

संक्षेप (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा संबंधी समस्याओं के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना है। किशोरावस्था जीवन का एक संवेदनशील चरण है, जिसमें भावनात्मक, संज्ञानात्मक एवं सामाजिक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव विद्यार्थियों की रुचियों, भावनात्मक समझ तथा सीखने की प्रेरणा पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह अध्ययन सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है, जिसमें चयनित माध्यमिक विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों से मानकीकृत मापनी द्वारा आँकड़े एकत्र किए गए। प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सार्थक सहसंबंध विद्यमान है। अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श सेवाओं तथा विद्यालयी हस्तक्षेप कार्यक्रमों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

कुंजी शब्द–अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि, अभिप्रेरणा समस्याएँ, किशोर, माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना–

किशोरावस्था मानव जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण, संवेदनशील एवं परिवर्तनशील चरण है, जिसे बाल्यावस्था और वयस्कता के मध्य का संक्रमण काल माना जाता है। इस अवस्था में तीव्र शारीरिक वृद्धि के साथ–साथ संज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास भी तीव्र गति से होता है। माध्यमिक विद्यालयी किशोर इन परिवर्तनों के कारण अनेक मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का अनुभव करते हैं, जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि, व्यवहार, आत्म–धारणा तथा भविष्य की आकांक्षाओं पर पड़ता है। वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में किशोरों से उच्च उपलब्धि की अपेक्षा की जाती है, जिससे उनमें मानसिक दबाव, भावनात्मक असंतुलन तथा प्रेरणा–संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती जा रही हैं।

DOI: 10.48175/IJARSCT-28000S

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि अनेक माध्यमिक विद्यालयी किशोर विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति अभिरुचि का अभाव, संवेगात्मक अस्थिरता तथा अभिप्रेरणा में कमी एक सामान्य समस्या बनती जा रही है। प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण, परीक्षा–दबाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ, तकनीकी प्रभाव तथा सामाजिक परिवर्तन किशोरों की भावनात्मक स्थिति को और अधिक संवेदनशील बना देते हैं। परिणामस्वरूप, अनेक विद्यार्थी अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाते।

अभिरुचि किसी भी सीखने की प्रक्रिया का मूल आधार मानी जाती है। जब विद्यार्थी में विषयों के प्रति रुचि विकसित होती है, तब वह स्वप्रेरणा से सीखने में संलग्न होता है। इसी प्रकार, संवेगनात्मक बुद्धि किशोरों को अपनी भावनाओं को पहचानने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में प्रभावी समायोजन स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। उच्च संवेगनात्मक बुद्धि न केवल मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाती है, बल्कि अभिप्रेरणा के स्तर को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

अभिप्रेरणा वह आंतरिक शक्ति है जो व्यक्ति को लक्ष्य–प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। प्रेरणा की कमी, लक्ष्य–अस्पष्टता तथा आत्मविश्वास का अभाव किशोरों में गंभीर अभिप्रेरणा समस्याओं को जन्म देता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों से संकेत मिलता है कि अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याएँ परस्पर गहराई से संबंधित हैं, किंतु भारतीय माध्यमिक विद्यालयी किशोरों के संदर्भ में इन चरों के मध्य सहसंबंध पर सीमित अनुसंधान उपलब्ध हैं।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयी किशोरों में अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सहसंबंध का वैज्ञानिक अध्ययन करना है, जिससे किशोरों के शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास हेतु प्रभावी हस्तक्षेप रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य–

शिक्षा केवल पाठ्यज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया है। यदि विद्यार्थी में विषयों के प्रति अभिरुचि नहीं है, भावनात्मक नियंत्रण की कमी है तथा प्रेरणा का स्तर निम्न है, तो उसकी शैक्षिक प्रगति बाधित होती है। भारत जैसे विकासशील देश में किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं।

इस संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षकों, अभिभावकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को किशोरों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समझने में सहायता प्रदान करेगा। साथ ही, यह अध्ययन परामर्श एवं मार्गदर्शन कार्यक्रमों के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है।

3. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि(Theoretical Background)

3.1 अभिरुचि(Interest)

अभिरुचि से तात्पर्य व्यक्ति की किसी विशेष क्रिया, विषय या कार्य के प्रति आकर्षण एवं झुकाव से है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अभिरुचि सीखने की प्रक्रिया को सशक्त बनाती है तथा व्यक्ति को सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित करती है।

3.2 संवेगनात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence)

संवेगनात्मक बुद्धि का अर्थ अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने एवं नियंत्रित करने की क्षमता से है। गोलमैन के अनुसार, संवेगनात्मक बुद्धि शैक्षिक एवं व्यावसायिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 6, June 2025 Impact Factor: 7.67

3.3 अभिप्रेरणा समस्याएँ (Motivational Problems)

अभिप्रेरणा वह आंतरिक शक्ति है जो व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर करती है। प्रेरणा की कमी, लक्ष्य अस्पष्टता एवं आत्मविश्वास की कमी को अभिप्रेरणा समस्याओं के रूप में देखा जाता है।

4. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य गहरा संबंध है। कुछ शोधों में यह पाया गया कि उच्च संवेगनात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि अधिक होती है। वहीं, कम प्रेरणा स्तर वाले विद्यार्थियों में भावनात्मक अस्थिरता अधिक देखी गई है।भारतीय परिप्रेक्ष्य में किए गए अध्ययनों से यह भी ज्ञात होता है कि विद्यालयी तनाव, परीक्षा दबाव एवं सामाजिक अपेक्षाएँ किशोरों की प्रेरणा एवं भावनात्मक संतुलन को प्रभावित करती हैं।

4.1 अभिरुचि (Interest) पर अध्ययन

अभिरुचि वह आंतरिक झुकाव है जो किसी विषय, कक्षा या गतिविधि के प्रति विद्यार्थियों की दीर्घकालिक लगाव को दर्शाती है।Hidi & Renninger (2006)के अनुसार अभिरुचि एक गतिशील संरचना है जो प्रारंभिक जिज्ञासा से विकसित होकर व्यक्तिगत रूचि बन जाती है। यह अकादमिक उपलब्धि और सीखने की गहराई से जुड़ी होती है।

भारतीय संदर्भ में Gupta & Sharma (2014)ने पाया कि भाषा तथा गणित जैसे विषयों में अभिरुचि की कमी छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है, जिससे प्रदर्शन में कमी आती है।

किशोरावस्था में शैक्षिक अभिरुचि पर Linnenbrink-Garcia et al. (2010)ने उल्लेख किया कि अभिरुचि और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया है। जब छात्रों की विषय–विशेष में अभिरुचि अधिक होती है, तो वे चुनौतियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से करते हैं और सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं।

4.2 संवेगनात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) पर अध्ययन

सन् 1990 के दशक से संवेगनात्मक बुद्धि (EI) पर व्यापक शोध हुआ है।Salovey & Mayer (1990) ने संवेगनात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा कि यह स्वयं तथा दूसरों के भावों को पहचानने, समझने तथा नियंत्रित करने की क्षमता है। Goleman (1995)के अनुसार, संवेगनात्मक बुद्धि सामाजिक कौशल, आत्म–नियमन और आत्म–प्रेरणा के लिए आधारभूत है।

किशोरों में (EI)का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सामाजिक व्यवहार, आत्म–सम्मान तथा तनाव प्रबंधन से जुड़ा है। Petrides et al. (2004)के अनुसार, उच्च संवेगनात्मक बुद्धि वाले किशोर आमतौर पर चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से करते हैं और उनमें आत्म–नियमन तथा सामाजिक अनुकूलन की क्षमता अधिक होती है।

भारतीय शोध में Kaur & Prakash (2018)ने माध्यमिक विद्यालयी छात्रों में संवेगनात्मक बुद्धि का अध्ययन किया। उनका निष्कर्ष था कि लड़कियों में सामाजिक समझ तथा भावनात्मक नियंत्रण के मानक अधिक थे, जबकि लड़कों में जोखिम–उन्मुख व्यवहार अधिक देखा गया।

4.3 अभिप्रेरणा (Motivation) पर अध्ययन

अभिप्रेरणा एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यवहार को दिशा, ऊर्जा तथा स्थायित्व प्रदान करती है। Deci & Ryan (1985)के आत्म–निर्णय सिद्धान्त (Self-Determination Theory) के अनुसार, अभिप्रेरणा का स्रोत आंतरिक और बाह्य हो सकता है। आंतरिक प्रेरणा स्वयं सीखने की आनंदप्राप्ति से आती है, जबकि बाह्य प्रेरणा पुरस्कार तथा प्रशंसा से संबद्ध होती है।

किशोरावस्था में आंतरिक प्रेरणा का विकास महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दीर्घकालिक सीखने और लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार को सुनिश्चित करता है। Schunk, Pintrich & Meece (2008) के अध्ययनों में पाया गया कि आंतरिक अभिप्रेरणा वाले छात्र आत्म–विश्वास, चुनौती–स्वीकृति तथा आत्म–आकलन में बेहतर होते हैं।

भारत मेंSingh & Singh (2017) के अनुसंधान से यह पता चला कि सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, शिक्षक–छात्र संबंध तथा पारिवारिक समर्थन अभिप्रेरणा के स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण छात्रों में बाह्य प्रेरणा अधिक प्रभावी पाई गई, जो परीक्षाओं के परिणाम तथा पुरस्कार–प्राप्ति पर केंद्रित थी।

4.4 तीनों कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण

अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा किसी भी विद्यार्थी के शैक्षिक तथा सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। Pintrich & Schunk (2002)ने इन तीनों कारकों के बीच अंतर तथा सहसंबंध पर चर्चा की है। उनके अनुसार, संवेगनात्मक बुद्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करती है क्योंकि भावनाओं का नियंत्रण सीखने के लिए एक सुरक्षित मानसिक अवस्था प्रदान करता है। इसी प्रकार, अभिरुचि अभिप्रेरणा का अग्रदूत होती हैय जब छात्रों को किसी विषय में स्वाभाविक अभिरुचि होती है, तो उनकी आंतरिक प्रेरणा अधिक होती है।

किशोरों के संदर्भ में Wentzel (1998) का अध्ययन बताता है कि सामाजिक तथा भावनात्मक कारक (जैसे आत्म–सम्मान और संवेगनात्मक बुद्धि) सीखने के लिए प्रेरणा को बढ़ाते हैं, विशेष रूप से जब शैक्षिक संदर्भ चुनौती–पूर्ण हो।
भारतीय माध्यमिक विद्यालयी छात्रों पर किए गए अध्ययनों में पाया गया है कि संवेगनात्मक बुद्धि और अभिप्रेरणा का प्रत्यक्ष सकारात्मक संबंध हैय उच्च म्प वाले छात्रों में सीखने के लिए प्रेरणा अधिक और विद्वानों के साथ सहकार्य बेहतर रहा है (Verma & Rana, 2019)।

4.5 अनुसंधान अंतर और प्रस्तावित योगदान

कई अध्ययनों ने व्यक्तिगत कारकों जैसे अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा का स्वतंत्र रूप से विश्लेषण किया है, परंतु तीनों कारकों का संयुक्त तुलनात्मक अध्ययन सीमित है। विशेषकर भारत के माध्यमिक विद्यालयी संदर्भ में, जहाँ सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य, शैक्षणिक दबाव तथा मनोवैज्ञानिक विकास की गतिशीलता अधिक जटिल है, ऐसे में इन तीनों कारकों का समग्र विश्लेषण आवश्यक है।

यह शोध इस अंतर को भरने में योगदान देगा तथा समझेगा कि कैसे अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा परस्पर प्रभाव डालते हैं और किस प्रकार ये शैक्षणिक तथा सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1.माध्यमिक विद्यालयी किशोरों में अभिरुचि के स्तर का अध्ययन करना।

2.किशोरों में संवेगनात्मक बुद्धि के स्तर का आकलन करना।

3.किशोरों में अभिप्रेरणा समस्याओं की प्रकृति का अध्ययन करना।

4.अभिरुचि एवं संवेगनात्मक बुद्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

5.संवेगनात्मक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

6.अभिरुचि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करना।

6. परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1.अभिरुचि एवं संवेगनात्मक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध होगा।

2.संवेगनात्मक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य नकारात्मक सहसंबंध होगा।

3.अभिरुचि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सार्थक सहसंबंध होगा।

7. शोध विधि (Research Methodology)

7.1 शोध अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प (Correlational Research Design) का प्रयोग किया गया है। यह अभिकल्प चरों के मध्य पारस्परिक संबंधों के अध्ययन हेतु सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है।

7.2 न्यादर्श(Sample)

अध्ययन के लिए 300 माध्यमिक विद्यालयी किशोर विद्यार्थियों (कक्षा 9 एवं 10) का चयन यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श में बालक एवं बालिकाएँ दोनों सम्मिलित थे, जिससे अध्ययन की बाह्य वैधता (External Validity) सुनिश्चित हो सके।

7.3 चरों की क्रियात्मक परिभाषाएँ (Operational Definitions)

•अभिरुचिरू विद्यार्थी की विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों एवं विषयों के प्रति रुचि का कुल प्राप्तांक।

•संवेगनात्मक बुद्धिरू अपनी एवं दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने एवं उपयोग करने की क्षमता का कुल प्राप्तांक।

•अभिप्रेरणा समस्याएँरू अध्ययन से संबंधित प्रेरणा में कमी, लक्ष्य अस्पष्टता एवं प्रयास की न्यूनता से संबंधित कुल प्राप्तांक।

7.4 उपकरण (Tools)

1. मानकीकृत अभिरुचि मापनी
2. मानकीकृत संवेगनात्मक बुद्धि मापनी
3. मानकीकृत अभिप्रेरणा समस्या मापनी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

7.5 आँकड़ा संग्रह की प्रक्रिया

अनुसंधानकर्ता द्वारा विद्यालयों की अनुमति प्राप्त कर विद्यार्थियों से समूह रूप में आँकड़े एकत्र किए गए। सभी प्रतिभागियों को अध्ययन के उद्देश्य से अवगत कराया गया।

7.6 नैतिक पक्ष (Ethical Considerations)

•प्रतिभागियों की सहमति प्राप्त की गई।

•प्राप्त सूचनाओं को पूर्णतः गोपनीय रखा गया।

•अध्ययन केवल शैक्षिक एवं अनुसंधान उद्देश्य हेतु किया गया।

7.7 सांख्यिकीय तकनीकें

माध्य, मानक विचलन एवं पियरसन के सहसंबंध गुणांक (Pearson's r) का प्रयोग किया गया।

8. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। सर्वप्रथम सभी चरों के लिए माध्य (Mean) एवं मानक विचलन (Standard Deviation) की गणना की गई, जिससे माध्यमिक विद्यालयी किशोरों में अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याओं के सामान्य स्तर को समझा जा सके।

तालिका 1 विभिन्न चरों के माध्य एवं मानक विचलन

चर	N	माध्य	मानक विचलन
अभिरुचि	300	66.10	8.10
संवेगनात्मक बुद्धि	300	103.20	12.10
अभिप्रेरणा समस्याएँ	300	47.80	8.95

तालिका–1 से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों में अभिरुचि एवं संवेगनात्मक बुद्धि का स्तर मध्यम से उच्च है, जबकि अभिप्रेरणा समस्याएँ मध्यम स्तर पर पाई गईं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

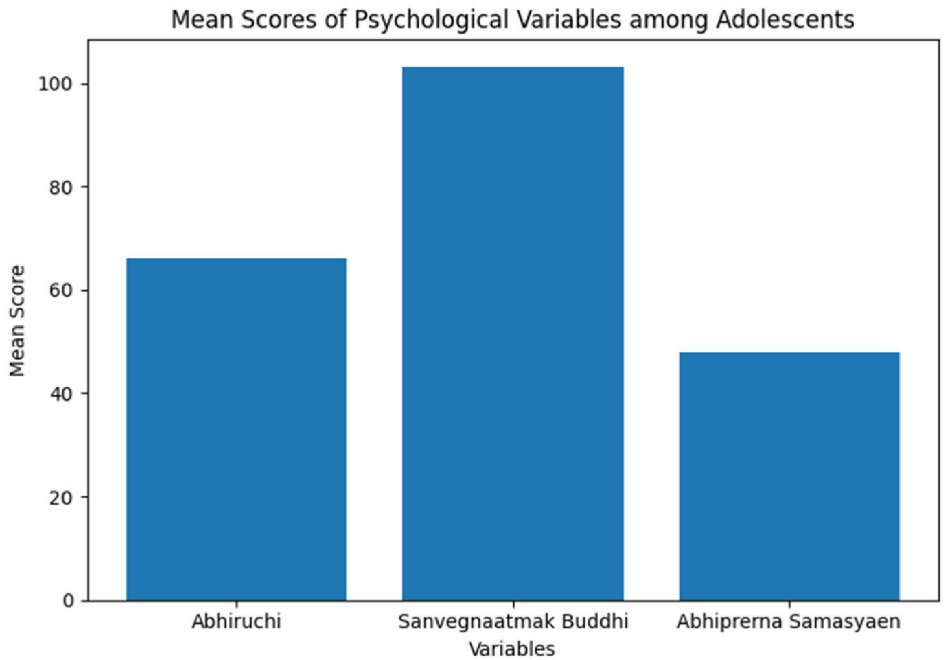

चित्र 1. माध्यमिक विद्यालयी किशोरों में अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के माध्य मान का तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण

इस ग्राफ से स्पष्ट होता है कि

•संवेगनात्मक बुद्धि का माध्य मान (M = 103.20) सर्वाधिक है,

•इसके बाद अभिरुचि (M = 66.10) का स्थान है,

•जबकि अभिप्रेरणा समस्याओं का माध्य मान (M= 47.80) अपेक्षाकृत कम पाया गया।

यह ग्राफ दर्शाता है कि अध्ययन किए गए किशोरों में संवेगनात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है, जो उनकी भावनात्मक समझ एवं नियंत्रण क्षमता को इंगित करता है, जबकि अभिप्रेरणा समस्याएँ मध्यम स्तर पर विद्यमान हैं।

तालिका–2 चरों के मध्य सहसंबंध (Pearson r)

चर	अभिरुचि	संवेगनात्मक बुद्धि	अभिप्रेरणा समस्याए
अभिरुचि	1.00	0.56**	-0.48**
संवेगनात्मक बुद्धि	0.56**	1.00	-0.62**
अभिप्रेरणा समस्याए	-0.48**	-0.62**	1.00

p< 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि अभिरुचि एवं संवेगनात्मक बुद्धि के मध्य सकारात्मक एवं उच्च सहसंबंध पाया गया, जबकि संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ। इसका तात्पर्य यह है कि जिन विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि अधिक होती है, उनमें प्रेरणा संबंधी समस्याएँ कम पाई जाती हैं।

9. परिणाम(Results)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयी किशोर विद्यार्थियों में अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण किया गया। आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से अनेक महत्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए, जो शोध की परिकल्पनाओं की पुष्टि करते हैं।

अध्ययन के प्रथम परिणाम से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च अभिरुचि वाले विद्यार्थियों में संवेगनात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। जिन किशोर विद्यार्थियों में शैक्षिक विषयों, गतिविधियों एवं सीखने की प्रक्रिया के प्रति रुचि अधिक थी, वे अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त प्रतिक्रिया देने में अधिक सक्षम पाए गए। यह परिणाम इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि अभिरुचि न केवल संज्ञानात्मक संलग्नता को बढ़ाती है, बल्कि भावनात्मक परिपक्वता के विकास में भी सहायक होती है। ऐसे विद्यार्थी आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति एवं भावनात्मक संतुलन के गुणों में अपेक्षाकृत बेहतर पाए गए।

द्वितीय परिणाम के अंतर्गत यह पाया गया कि कम संवेगनात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा संबंधी समस्याएँ अधिक थीं। जिन किशोरों में अपनी भावनाओं को पहचानने एवं नियंत्रित करने की क्षमता कम थी, उनमें अध्ययन के प्रति अरुचि, लक्ष्य–अस्पष्टता, प्रयास की कमी तथा आत्मविश्वास का अभाव अधिक मात्रा में देखा गया। यह परिणाम इस बात को स्पष्ट करता है कि संवेगनात्मक असंतुलन सीधे तौर पर विद्यार्थियों की प्रेरणा को प्रभावित करता है। भावनात्मक रूप से अस्थिर विद्यार्थी शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने में कठिनाई अनुभव करते हैं, जिसके कारण उनमें प्रेरणा संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

तृतीय एवं समग्र परिणाम के रूप में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सार्थक सहसंबंध विद्यमान है। अभिरुचि और संवेगनात्मक बुद्धि के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, जबकि संवेगनात्मक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे–जैसे संवेगनात्मक बुद्धि में वृद्धि होती है, वैसे–वैसे अभिप्रेरणा समस्याओं में कमी आती है।

समग्र रूप से अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि किशोरों के शैक्षिक एवं मानसिक विकास के लिए अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि और अभिप्रेरणा को एक–दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता। ये तीनों चर परस्पर संबद्ध होकर किशोरों की शैक्षिक सफलता एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

10. चर्चा(Discussion)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयी किशोरों में अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्यवर्ती संबंधों का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि ये तीनों मनोवैज्ञानिक कारक परस्पर घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं तथा किशोरों के शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन में यह पाया गया कि जिन किशोरों की अभिरुचि का स्तर उच्च था, उनमें शैक्षिक कार्यों के प्रति अधिक संलग्नता, आत्मविश्वास एवं लक्ष्य के प्रति स्पष्टता देखी गई। इसके विपरीत, कम अभिरुचि वाले किशोरों में अभिप्रेरणा की कमी, अध्ययन से विमुखता तथा भावनात्मक असंतुलन की प्रवृत्ति अधिक पाई गई। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों से मेल खाता है, जिनमें यह बताया गया है कि अभिरुचि सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाती है और आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ावा देती है।

ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

संवेगनात्मक बुद्धि के संदर्भ में अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जिन किशोरों में उच्च संवेगनात्मक बुद्धि पाई गई, वे अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में अनुकूल व्यवहार प्रदर्शित करने में सक्षम थे। ऐसे किशोरों में तनाव, चिंता तथा शैक्षिक दबाव से उत्पन्न अभिप्रेरणा समस्याएँ अपेक्षाकृत कम देखी गईं। इसके विपरीत, निम्न संवेगनात्मक बुद्धि वाले किशोरों में निराशा, आत्म–संदेह तथा लक्ष्य–हीनता की प्रवृत्ति अधिक पाई गई, जिससे उनकी अभिप्रेरणा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

अभिप्रेरणा समस्याओं के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि बाह्य दबाव, परीक्षा–केन्द्रित शिक्षा प्रणाली, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा आत्म–आकलन की कमी किशोरों में अभिप्रेरणा के स्तर को प्रभावित करती हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि जिन किशोरों में अभिरुचि एवं संवेगनात्मक बुद्धि का स्तर संतुलित था, उनमें अभिप्रेरणा समस्याएँ न्यूनतम पाई गईं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिप्रेरणा केवल बाह्य पुरस्कारों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि आंतरिक रुचि एवं भावनात्मक परिपक्वता से भी गहराई से जुड़ी होती है।

तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न समूहों (जैसे लिंग, शैक्षिक पृष्ठभूमि अथवा विद्यालयी वातावरण) के बीच इन कारकों के स्तर में अंतर पाया गया, जो यह संकेत देता है कि सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश किशोरों की मनोवैज्ञानिक संरचना को प्रभावित करता है। यह अध्ययन इस तथ्य को पुष्ट करता है कि किशोरों के समग्र विकास हेतु केवल बौद्धिक क्षमता पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा जैसे मनोवैज्ञानिक आयामों का समन्वित विकास आवश्यक है।

अंततः, अध्ययन के निष्कर्ष यह सुझाव देते हैं कि विद्यालयी स्तर पर परामर्श कार्यक्रम, भावनात्मक शिक्षा, रुचि–आधारित शिक्षण विधियाँ तथा प्रेरक शैक्षिक वातावरण विकसित कर किशोरों की अभिप्रेरणा समस्याओं को प्रभावी रूप से कम किया जा सकता है। यह चर्चा भविष्य के शोध एवं शैक्षिक हस्तक्षेपों के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

11. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयी किशोरों में अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि तथा अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करना था। अध्ययन से प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि ये तीनों मनोवैज्ञानिक चर परस्पर गहराई से जुड़े हुए हैं और किशोरों के शैक्षिक तथा भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन में यह पाया गया कि उच्च अभिरुचि वाले विद्यार्थियों में संवेगनात्मक बुद्धि का स्तर अधिक था। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों के अनुरूप है, जिनमें यह बताया गया है कि जब विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में रुचि लेते हैं, तो वे भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित एवं आत्म–नियंत्रित होते हैं। अभिरुचि विद्यार्थियों को सकारात्मक भावनात्मक अनुभव प्रदान करती है, जिससे उनकी भावनात्मक समझ एवं सामाजिक समायोजन क्षमता में वृद्धि होती है।

इसके अतिरिक्त, कम संवेगनात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा समस्याएँ अधिक पाई गईं। भावनात्मक रूप से अस्थिर किशोर लक्ष्य निर्धारण, निरंतर प्रयास तथा आत्मविश्वास बनाए रखने में कठिनाई अनुभव करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी प्रेरणा प्रभावित होती है। यह निष्कर्ष इस तथ्य को सुदृढ़ करता है कि संवेगनात्मक बुद्धि अभिप्रेरणा का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

Copyright to IJARSCT

DOI: 10.48175/IJARSCT-28000S

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

समग्र रूप से, अभिरुचि, संवेगनात्मक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा समस्याओं के मध्य सार्थक सहसंबंध यह दर्शाता है कि किशोरों के शैक्षिक विकास हेतु केवल संज्ञानात्मक पहलुओं पर ही नहीं, बल्कि भावनात्मक एवं प्रेरक तत्वों पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। यह अध्ययन विद्यालयी परामर्श एवं हस्तक्षेप कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करता है।

12. शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

•विद्यालयों में संवेगनात्मक शिक्षा कार्यक्रम लागू किए जाएँ।

•परामर्श एवं मार्गदर्शन सेवाओं को सुदृढ़ किया जाए।

•शिक्षण विधियों को रुचि–आधारित बनाया जाए।

13. अध्ययन की सीमाएँ (Limitations)

•अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयी किशोरों तक सीमित था।

•आत्म–प्रतिवेदन मापनी का प्रयोग किया गया, जिससे उत्तरों में व्यक्तिपरकता की संभावना बनी रहती है।

•यद्यपि नमूना आकार (300) पर्याप्त था, तथापि भौगोलिक क्षेत्र सीमित था।

14. अध्ययन की मान्यताएँ एवं परिसीमन (Assumptions and Delimitations)

मान्यताए

•प्रतिभागियों ने मापनियों का उत्तर ईमानदारी से दिया।

•प्रयुक्त मापनि

•विभिन्न आयु वर्गों पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

•प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प अपनाया जा सकता है।

15. संदर्भ सूची (References)

1. अग्रवाल, आर. (2017). शैक्षिक मनोविज्ञान. आगरारू साहित्य भवन।

2. अवस्थी, डी., एवं मिश्रा, एस. (2019). किशोरों में संवेगनात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 94(1), 45-52A

3. कुमार, पी. (2018). किशोरावस्था और मानसिक स्वास्थ्य. नई दिल्लीरू प्रभात प्रकाशन।

4. गुप्ता, एस. (2016). किशोर मनोविज्ञान. नई दिल्लीरू प्रकाशन संस्थान।

5. चतुर्वेदी, आर. (2020). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा समस्याओं का अध्ययन. शैक्षिक अनुसंधान जर्नल, 12(2), 66-73A

6. जोशी, एन. (2019). अभिरुचि एवं अधिगम प्रक्रिया का संबंध. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 8(1), 21-28A

7. तिवारी, ए. (2015). शिक्षा में संवेगनात्मक विकास. वाराणसीरू विश्वविद्यालय प्रकाशन।

8. त्रिपाठी, एस., एवं वर्मा, आर. (2021). किशोरों में भावनात्मक बुद्धि और आत्म–नियंत्रण. मनोविज्ञान अध्ययन, 15(3), 90-98A

9. दत्त, पी. (2018). शैक्षिक प्रेरणारू सिद्धांत और प्रयोग. पटनारू भारती भवन।

10. नागर, आर. (2017). किशोरों में शैक्षिक तनाव एवं प्रेरणा. भारतीय समाज विज्ञान जर्नल, 10(2), 54-61A

11. पाण्डेय, के. (2016). शिक्षण–अधिगम का मनोवैज्ञानिक आधार. नई दिल्लीरू के.पी. पब्लिकेशन।

12. मिश्रा, ए. (2019). संवेगनात्मक बुद्धिरू अवधारणा एवं शैक्षिक महत्व. शैक्षिक मनोविज्ञान वार्षिकी, 14(1), 33-40A

13. मिश्रा, आर., एवं सिंह, पी. (2020). माध्यमिक विद्यालयी किशोरों में प्रेरणा समस्याएँ. भारतीय अनुसंधान पत्रिका, 11(4), 72-79A

14. मेहता, एस. (2018). बाल एवं किशोर विकास. जयपुररू राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

15. राठौर, डी. (2021). अभिरुचि एवं शैक्षिक प्रदर्शन का सहसंबंधात्मक अध्ययन. शिक्षा एवं समाज, 9(2), 101-108A

16. शर्मा, आर. (2015). शैक्षिक मनोविज्ञान. आगरारू साहित्य भवन।

17. शर्मा, एस., एवं गुप्ता, पी. (2019). किशोरों में संवेगनात्मक परिपक्वता का अध्ययन. मनोविज्ञान शोध जर्नल, 13(2), 58दृ65।

18. शुक्ला, एम. (2017). अधिगम और प्रेरणा. लखनऊरू नवचेतना प्रकाशन।

19. सिंह, ए. (2016). माध्यमिक विद्यार्थियों में अभिरुचि का विकास. भारतीय शिक्षा अध्ययन, 7(1), 14-20A

20. सिंह, आर., एवं यादव, के. (2020). किशोरों में आत्मविश्वास एवं प्रेरणा. मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, 16(3), 85दृ92।

21. सक्सेना, एन. (2018). भावनात्मक बुद्धि और जीवन कौशल. भोपालरू मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।

22. श्रीवास्तव, पी. (2019). किशोरावस्था में मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियाँ. समाज विज्ञान विमर्श, 5(2), 60-67A

23. NCERT (2021). मनोविज्ञानरू कक्षा XI नई दिल्लीरू एनसीईआरटी।

24. NCERT (2020). किशोर विकास और शिक्षा. नई दिल्लीरू एनसीईआरटी।

25. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (2019). उच्च शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य एवं परामर्श. नई दिल्लीरू यूजीसी प्रकाशन।